कबीर और जैन मुनि उपाध्याय गुप्ति सागर जी का समाज-सुधारक रूप

नीरज कुमारी*

सार - संक्षेप

हिन्दू - मुस्लिम समन्वयक कबीर ने राम और रहीम, काबा और कैलाश तथा कुरान और पुराण में कोई अन्तर नही किया। कबीर की सपाट बयानी और निषेधात्मक विचार जनसामान्य को सद्मार्ग पर लाने का प्रयत्न ही प्रतीत होते हैं। समाज की कुरीतियों की कबीर ने खूब खबर ली। कहीं उनके मुख से वेद तथा कुरान के प्रति कतिपय रूखे शब्द निकले हैं तो कहीं अपने हृदय के बुलबुले ही उड़ेले, ढोंग का विरोधा किया, धार्मिक ग्रन्थ का नही। प्रतीत होता है कि दोनो संत कवियों का अभिप्राय यही था कि जनता को ग्रन्थों और पंथो के विवाद में न पड़कर आत्मानुभूति करनी चाहिए जिसके लिए न ग्रन्थ की आवश्यकता है न पंथ की। केवल एक संत की आवश्यकता है।

अतः दोनो ने गुरु तत्व पर विशेष बल दिया है। दोनो संत कवि सदैव रूढ़िवाद और ऐसी निरर्थक प्रथाओं के सबल विरोधी रहे हैं जो असंगत हो चुकी हैं। कबीर धार्मिक दृष्टा से अधिक धार्म शिक्षक थे। मुनिश्री गुप्ति सागर जी प्रान्तवाद और भाषाओं की संकुचित सीमाओं का अतिक्रमण कर राष्ट्रीय एकता पर बल दे रहे हैं।

युग की चेतना को अभिव्यक्त करने वाला युग प्रतिनिधि कहा जाता है। कवि सृष्टा है। वह समाज से प्रेरणा प्राप्त कर अपने काव्य से समाज को प्रभावित करता है अतः काव्य में समाज एवं जीवन की अभिव्यक्ति एक स्वभाविक प्रक्रिया है जो कलाकार अपने युग के समाज एवं उनकी परिस्थितियों के प्रति विशेष जागरूक होता है, उसकी कला एक ओर सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटन करती है तो दूसरी ओर समाज को दिशा देने का कार्य भी सम्यक् रूपेण सम्पन्न करती है।

सन्तों के चरित्र और साहित्य के विषय में प्रायः यह धारणा बनी रहती है कि वे निवृत्तिमार्गी या पलायनवादी होते हैं। लेकिन यह बात वास्तव में सत्य नहीं है। वे निजी आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ ही सामाजिक चेतना को भी विकसित करते हैं। साधना के मार्ग पर अविश्रान्त रूप से बढ़ते हुए वे अपने व्यक्तित्व को निर्मल बनाकर स्वयं अनुकरण की वस्तु हो जाते हैं। अपने कर्तव्य ओर अकर्तव्य का ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों के समष्टि रूप का नाम समाज है। व्यक्ति के आचार-विचारो के अनुरूप ही समाज का स्वरूप होता है। यही कारण है कि जब तक व्यक्तियों में किसी प्रकार के दोष उत्पन्न नही होते। समाज का स्वरूप सुन्दर और सुव्यवस्थित रहता है किन्तु व्यक्ति के कर्तव्यच्युत होते ही समाज में विश्रृंखलता आने लगती है। इसी विश्रृंखलता को दूर करने के लिए प्रायः महापुरूषों का जन्म हुआ करता है। कबीर और गुप्तिसागर जी का कार्य महान है।

कबीर एक सच्चे समाज सुधारक थे। उन्होनें अपनी व्यंग्यात्मक वाणी से तत्कालीन समाज के कलुषित

* प्रवक्ता, हिंदी, बी.एस.वी. कन्या महाविद्यालय, जसपुर। ईमेलः kumarineeraj055@gmail.com